निरंजन बोहा

ई—मेल-niranjanboha@yahoo.com

नये क्षितिज

देवेन्द्र साथी के साथ निर्मल देवी के विवाह की चर्चा कई दिन चलती रही। उसके आसपास के समाज और नज़दीकी रिश्तेदारों के लिए यह विवाह एक गम्भीर चुनौती की तरह था। पिछले दस वर्षों से विधवा का जीवन व्यतीत कर रही निर्मला बारह साल की बेटी की मां भी थी। अपनी उम्र के चालीस वर्ष पार कर, उसने अपने ही हम-उम्र, एक लेखक व यूनियन कार्यकर्ता से अन्तर्जातीय विवाह करवाकर निश्चय ही उस लक्ष्मण रेखा को पार कर लिया था, जो उसकी परवरिश के माहौल ने खींची थी।

इस विवाह की खुशी में उसने अपने स्कूल-स्टाफ को चाय की पार्टी भी दी थी। एक ही स्कूल में पढ़ाते होने के कारण व आपसी मेल-मिलाप का सहारा लेकर, मैंने इस विवाह के बारे में अपनी प्रतिक्रिया दी "बहन जी, मीना की उम्र अभी बारह साल है, दो-चार साल में उसका विवाह करना होगा। आपका इस उम्र में करवाया अन्तर्जातीय विवाह उसके लिए योग्य वर ढूंढने में कितनी रुकावट बनेगा, क्या आपने इस बारे में भी सोचा है?"

"क्या इतनी बड़ी दुनिया में एक ही देविन्दर साथी है?" गम्भीर आवाज में बोलते, उसने निगाह ऊपर उठाई जैसे किसी नये क्षितिज की तरफ इशारा कर रही हो।

हिन्दी अनुवाद : जगदीश राय कुलरियाँ

निरंजन बोहा : पंजाबी कहानी, मिन्नी कहानी, पंजाबी साहित्य और आलोचना में निरंजन बोहा का प्रमुख योगदान है। इनका पंजाबी में एक लघुकथा संग्रह प्रकाशित हो चुका है, जिसे हिन्दी में श्री योगराज प्रभाकर ने अनुवाद किया है। इनकी और भी कई पुस्तके प्रकाशित हो चुकी है।